॥ श्री गणेशाय नमः॥

सूर्य (रवि)

सूर्यदेव का स्वरूप :- भगवान सूर्य का वर्ण लाल है। दो भुजाएँ हैं, दोनो हाथों में कमल सुशोभित है। कमल के आसन पर विराजमान रहते हैं। सिर पर सुन्दर स्वर्णमुकुट है, गले में रत्नों की माला है। सूर्य भगवान की कान्ति कमल के भीतरी भाग जैसी है। मुख्य अस्त्र चक्र, शक्ति, पाश और अङ्कुश है। सात घोड़ों वाला रथ उनका वाहन है, रथ में एक ही चक्र है। इनके साथ साठ हजार बालखिल्य स्वस्तिवाचन और स्तुति करते हुए चलते हैं। ऋषि, गंधर्व, अप्सरा, नाग, यक्ष, राक्षस और देवता सूर्य भगवान की उपासना करते हुए चलते हैं।

मार्कण्डेय पुराण के अनुसार सूर्य ब्रह्मस्वरूप हैं। सूर्य सर्वभूतस्वरूप सनातन परमात्मा हैं। सूर्य ग्रह ही ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र बनकर जगत् का सृजन, पालन और संहार करते हैं। ऋग्वेद के अनुसार सूर्य देवता सबके प्रेरक, अन्तर्यामी तथा परमात्मस्वरूप हैं। एक बार दैत्यों, दानवों एवं राक्षसों ने संगठित होकर देवताओं को पराजित कर उनके अधिकारों को छीन लिया। देवमाता अदिति इस विपत्ति से त्राण पाने के लिए भगवान् सूर्य की उपासना की, भगवान् सूर्य ने प्रसन्न होकर अदिति के गर्भ से अवतार लिया और देव शत्रुओं को पराजित कर सनातन वेदमार्ग की स्थापना की।

मध्याह्नबली, आकार चतुरस्र, वर्ण रक्त, जाति क्षत्रिय, वनचर, स्वामी मनुष्यलोक और देवलोक तथा पशु-भूमि, पित्त प्रकृति, रजोगुणी, पृष्ठोददय, पूर्वमुख, मूलपदार्थ, अश्वादिजीव स्वामी। वैडूर्य, मुक्ता, पाषाण, सुवर्ण, ताम्र, कास्य, स्फटिक, रक्त वस्त्र, इलायची, नारियल, सुपारी, जायफल आदि के स्वामी।

सूर्य ग्रह :- सिंह राशि का स्वामी है। सूर्य मेष के १० अंश पर उच्च तथा तुला के १० अंश पर नीच का होता है। मूलत्रिकोण राशि सिंह है। इसकी महादशा ६ वर्ष की होती है। सूर्य २२ वें वर्ष में भाग्योदय कारक होता है।

सूर्य ग्रह :- गोचर में जब जन्म राशि से ३, ६, १० और ११ स्थानों में सूर्य जाता है तो सुख, यश, राजसम्मान, कार्यसिद्धि आदि शुभ फल प्राप्त होता है। १, २, ५, ७ और ९ पूज्य स्थान तथा ४, ८, १२ अशुभ स्थान होता है। अशुभ होने पर सभी कार्य-धन नाश आदि होता है।

रविवार व्रत विधि :- प्रातःकाल ब्रह्ममुहुर्त (सूर्योदय से २ घण्टा पहाले या ४-५ प्रातः) में उठकर नित्य-कर्म आरम्भ करना चाहिए तथा संध्या वन्दनादि के बाद अरुणोदय काल में सूर्यार्घ्य देकर आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। तथा यथा शक्ति मन्त्र जप करे एवं दान देवे और १२-३ बजे के बीच मालपूआ भोजन करे। रात्रि में सूर्यास्त के बाद अन्न-जल कुछ भी नहीं ले और सोमवार को प्रातःकाल सूर्यार्घ्य प्रदान करके पारण करे।

रक्तचन्दन मिश्रित जल रक्त-पुष्प के साथ लेकर गायत्री मन्त्र से सर्यार्घ्य देना चाहिए।

सूर्यार्घ्य विनियोग :- ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः सूर्यार्घ्य दाने विनियोगः॥

आवाहन :- एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशि जगत्पते। करुणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते॥

विशेष :- सूर्य ग्रह की शांति के लिए हरिवंश पुराण का श्रवण करना चाहिए।

दान पदार्थ :- माणिक्य, गेहूँ, गुड़, सवत्सा-गौ, कमलपुष्प, नूतनगृह, रक्त-चन्दन, रक्त-वस्त्र, सुवर्ण, ताम्र, केशर, मूंगा, दक्षिणा, वरण आदि।

धारणार्थ रत्ना :- माणिक्य।

धारणार्थ औषधि :- बिल्वमूल (ताम्बे के यन्त्र में धारण करना चाहिए)।

ध्यान :- पद्मासनः पद्माकरो द्विवाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुरङ्गवाहनः।
दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः॥
(पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भःसमद्युतिः। सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च द्विभुजः स्यात् सदारविः॥)

१५ सूर्य यन्त्रम्

६	१	८
७	५	३
२	९	४

तन्त्रसारोक्त मन्त्र :- ॐ घृणिः सूर्याय नमः। जपसंख्या ७,०००

तन्त्रोक्त बीजमन्त्र :- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।

बीजमन्त्र (पञ्जिका) :- ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः।

सूर्य गायत्री :- आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमही तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।

पौराणिक जप मंत्र :- जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

वैदिकमंत्र विनियोग [१]:- अस्य श्री सूर्यग्रह मन्त्रस्य आकृष्णेनेति मन्त्रस्य हिरण्यस्तूप ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः सविता देवता रजसेति बीजम् वर्तमान इति शक्तिः। सूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥

अथ न्यास [२]:- ॐ हिरण्यस्तूपऋषये नमः शिरसि।
ॐ त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।
ॐ सवितृदेवतायै नमः हृदये।
ॐ रजसा बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ वर्तमान शक्तये नमः पादयोः।

करन्यास [३]:- ॐ आकृष्णेनेत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ रजसेति तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ वर्तमान इति मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ निवेशयन्नमृतम्मर्त्य चेत्यनामिकाभ्यां नमः।
ॐ हिरण्ययेन सविता रथेनेति कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ आदेवो भुवनानि पश्यन्निति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास [४]:- ॐ आकृष्णेनेति हृदयाय नमः।
ॐ रजसेति शिरसे स्वाहा।
ॐ वर्तमान इतिशिखायै वषट्।
ॐ निवेशयन्नमृतम्मर्त्य चेति कवचाय हुम्।
ॐ हिरण्ययेनसविता रथेनेति नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ आदेवो याति भुवनानि पश्यन्नित्यस्त्राय फ़ट्।

वैदिक जप मन्त्र :- ॐ आ कृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय नमः॥

आदित्यहृदयस्तोत्रम्

विनियोग- ॐ अस्य आदित्यहृदयस्तोत्रस्य अगस्त्य ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः आदित्यहृदयभूतो भगवान् ब्रह्मा देवता, निरस्ताशेषविघ्नतया ब्रह्मविद्यासिद्धौ सर्वत्र जयसिद्धौ च विनियोगः।

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्। रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्॥१॥
दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्। उपगम्याब्रवीद् राममगस्त्यो भगवानृषिः॥२॥
राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्। येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसि॥३॥
आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्। जयावहं जपेन्नित्यं अक्षय्यं परमं शिवम्॥४॥
सर्व मङ्गलमाङ्गल्यं सर्व पापप्रणाशनम्। चिन्ता - शोक - प्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम्॥५॥
रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्। पुजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम्॥६॥
सर्वदेवात्मको ह्येषः तेजस्वी रश्मिभावनः। एष देवासुरगणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभिः॥७॥
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः। महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपां पतिः॥८॥
पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः। वायुर्वह्निः प्रजाः प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः॥९॥
आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्। सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः॥१०॥
हरिदश्वः सहस्त्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्। तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्ड अंशुमान्॥११॥
हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोश्वभास्करो रविः। अग्निगर्भोश्वदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः॥१२॥
व्योमनाथस्तमो भेदी ऋग्यजुः सामपारगः। घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः॥१३॥
आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः। कविर्विश्वो महातेजाः रक्तः सर्वभवोद्भवः॥१४॥

नक्षत्र - ग्रह - ताराणामधिपो विश्वभावनः। तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते॥१५॥
नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रयेनमः। ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः॥१६॥
जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः। नमो नमः सहस्त्रांशो अदित्याय नमो नमः॥१७॥
नमः उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः। नमः पद्मप्रबोधाय मार्तण्डाय नमो नमः॥१८॥
ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे। भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः॥१९॥
तमोघ्नघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने। कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः॥२०॥
तप्तचामीकराभाय वह्नये विश्वकर्मणे। नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रवये लोकसाक्षिणे॥२१॥
नाशयत्येष वै भूतं तथैव सृजति प्रभुः। पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः॥२२॥
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः। एष एवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम्॥२३॥
वेदाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च। यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वे एष रविः प्रभुः॥२४॥
एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च। कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव॥२५॥
पूजयस्वै नमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्। एतत् त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि॥२६॥
अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं वधिष्यसि। एवमुक्त्वा तदाश्वगस्त्यो जगाम च यथागतम्॥२७॥
एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत् तदा। धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान्॥२८॥
आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वा तु परं हर्षमवाप्तवान्। त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्॥२९॥
रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा युद्धाय समुपागमत्। सर्वयत्नेन महता वधे तस्य धृतोऽभवत्॥३०॥

अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति॥३१॥

सूर्यकवचस्तोत्रम्

याज्ञवलक्य उवाच।

श्रृणुष्व मुनिशार्दूल सूर्यस्य कवचं शुभम्। शरीरारोग्यदं दिव्यं सर्वसौभाग्यदायकम्॥१॥
देदीप्यमानमुकुटं स्फुरन्मकरकुण्डलम्। ध्यात्वा सहस्त्रकिरणं स्तोत्रमेतदुदीरयेत्॥२॥
शिरो मे भास्करः पातु ललाटं मेऽमितद्युतिः। नेत्रे दिनमणिः पातु श्रवणे वासरेश्वरः॥३॥
घ्राणं घर्मघृणिः पातु वदनं वेदवाहनः। जिह्वां मे मानदः पातु कण्ठं मे सुरवन्दितः॥४॥
स्कन्धौ प्रभाकरः पातु वक्षः पातु जनप्रियः। पातु पादौ द्वादशात्मा सर्वाङ्गं सकलेश्वरः॥५॥
सूर्यरक्षात्मकं स्तोत्रं लिखित्वा भूर्जपत्रके। दधाति यः करे तस्य वशगाः सर्वसिद्धयः॥६॥
सुस्नातो यो जपेत्सम्यग्योऽधीते स्वस्थमानसः। स रोगमुक्तो दीर्घायुः सुखं पुष्टिं च विन्दति॥७॥

॥ इति श्रीमद्याज्ञवल्क्यमुनिविरचितं सूर्यकवचस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

---

[१] **विनियोग**- - विनियोग करते समय एक छोटे ताम्बे के चम्मच या खर या आम के पत्ते से लुटिया में से गंगाजल युक्त पानी उठाए रखे और विनियोग के मन्त्र का अन्तिम शब्द **"विनियोगः"** बोलते समय चम्मच का पानी एक छोटी प्याली या प्लेट में उडल दे इस चम्मच को **"आचमनी"** कहते हैं।

[२] **अथ न्यासः** --तत्त्व मुद्रा से अर्थात् मध्यमा, अनामिका और अंगुष्ठ के अग्र भाग को मिलाकर सिर आदि का स्पर्श करे।

ॐ ..... नमः शिरसि।

ॐ ..... नमः मुखे।

ॐ ..... नमः हृदये।

ॐ ..... नमः गुह्ये।

ॐ ..... नमः पादयोः।

[३] **करन्यासः** करन्यास एक ही समय में दोनो हाथों से करे।

ॐ ..... ऽङ्गुष्ठाभ्यां नमः। (तर्जनी द्वारा अँगुठे के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ ..... तर्जनीभ्यां नमः। (अँगुठे से तर्जनी के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ ..... मध्यमाभ्यां नमः। (अँगुठे से मध्यमा के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ ..... ऽनामिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से अनामिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ ..... कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से कनिष्ठिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। (हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करे)

[४] **हृदयादिन्यासः** दाहिने हाथ की पांचो अंगुलियों से हृदय आदि का स्पर्श करे।

ॐ ..... हृदयाय नमः।

ॐ ..... शिरसे स्वाहा।

ॐ ..... शिखायै वषट्।

ॐ ..... कवचाय हुम्। (दोनों भुजा अर्थात् कन्धे के पास स्पर्श करे)

ॐ ..... नेत्रत्रयाय वौषट्। (दोनों नेत्रों और फिर ललाट के मध्य भाग का स्पर्श करे)

ॐ ..... ऽस्त्राय फ़ट्। (दायें हाथ को सर के ऊपर बायीं ओर से पीछे ले जाकर सर के दायीं ओर से आगे की ओर लाये, फिर बायीं हाथेली पर दायें हाथ की तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों से ताली बजाये)

Please send corrections to pawan2303@gmail.com